RE. DISCUSSION ON A BILL

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री मुख़्तार अब्बास नक़वी): सर, अभी कई ऑनरेबल मेम्बर्स बोलने के लिए रह गए हैं, इसलिए हमारा यह अनुरोध है कि जो The Bureau of Indian Standards Bill, 2015 है। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश): सर, पहले मुझे बोलने दिया जाए। ...(**व्यवधान**)...

श्री मुख़्तार अब्बास नक़वी: क्या आप कल जाने वाले हैं? ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: हां।

श्री मुख़्तार अब्बास नक़वी: सर, 2012 में स्टैंडिंग कमेटी ने जो recommendations दी, उनको include करके यह छोटा-सा बिल है। ...(**व्यवधान**)...

श्री प्रमोद तिवारी: सर, पहले मुझे बोलने दिया जाए। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: I will come to you.

श्री मुख़्तार अब्बास नक़वी: हमारी रिक्वेस्ट है कि अगर इस पर कोई ऑनरेबल मेम्बर बोलना चाहते हैं तो बोलें, नहीं तो इसको हम Half an Hour Discussion में ले सकते हैं। ...(**व्यवधान**)...

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal): Two hours are allotted for that Bill. ...(*Interruptions*)... These two hours have to be given. ...(*Interruptions*)... Let's not take short-cut method. ...(*Interruptions*)... Let the discussion on the President's Address continue. ...(*Interruptions*)...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: If you want to speak for two hours, we have no problem. ...(*Interruptions*)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Tiwari will speak now. ...(*Interruptions*)... After that, we can take up the Bill also. ...(*Interruptions*)...

SHRI SHANTARAM NAIK (Goa): Every day, we are being *. ...(*Interruptions*)... We are being * every day. ...(*Interruptions*)... This is not the way. ...(*Interruptions*)... When President's Address is there, you are bringing Bills. ...(*Interruptions*)...

SHRI MUKHTAR ABBAS NAQVI: Sir, we are ready to sit here till eleven. ...(*Interruptions*)... We have no problem. ...(*Interruptions*)... ठीक है। हम ग्यारह बजे तक बैठेंगे, कोई प्रॉब्लम नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्री तपन कुमार सेन: साढ़े सात बज गए हैं, हम आठ बजे तक बैठेंगे। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shantaramji, there is an understanding and that is why he is saying so. ...(*Interruptions*)... In any case, if the House doesn't want, we will not take it up. But there is an understanding that every day we will take up

*Expunged as ordered by the Chair.

one Bill. ...(*Interruptions*)... So, it is his duty to remind me. If the Houses doesn't want, we will not take it up. But he is doing his duty and reminding me; there is no harm in it. So, don't say that we are being *. The word * is expunged because nobody can * us. So, I am expunging that. Now Mr. Pramod Tiwari, you speak.

MOTION OF THANKS ON PRESIDENT'S ADDRESS

श्री प्रमोद तिवारी (उत्तर प्रदेश): डिप्टी चेयरमैन सर, महामहिम राष्ट्रपति जी के अभिभाषण को मैंने कई बार पढ़ा, बार-बार पढ़ा, लेकिन उसमें मुझे कुछ नजर नहीं आया। उसमें मुझे एक हताश, निराश और एक ऐसी सरकार का वक्तव्य नजर आया, जो अंधेरे में इधर-उधर भटक रही है, जिसे कहीं रास्ता नहीं मिल रहा है। इसलिए मैं महामहिम राष्ट्रपति जी के प्रति तो आदर व्यक्त करता हूं, लेकिन सरकार का जो अभिभाषण है, उसको समर्थन नहीं दे सकता।

जो मौजूदा हालात हैं, उसमें एक बात बहुत साफ दिख रही है। इस सरकार ने दीवार पर लिखी एक इबारत देख ली है। इन्होंने यह वादा किया था कि हर परिवार को ये 15 लाख रूपये देंगे, लेकिन दिया कुछ नहीं, जो था वह भी ले लिया। दो करोड़ नौजवानों को हर साल रोजगार देने का वादा था, रोजगार दिया तो किसी को नहीं, जिनके पास था उनका भी छीन लिया। किसान से कहा था हम 50 प्रतिशत बोनस देंगे, 50 प्रतिशत बोनस तो छोड़ दीजिए, जो एमएसपी है, जो खरीद का रेट था, वह भी इन्होंने कम कर दिया। आज आम किसान बाजार में बिचौलिए के पास अपना अनाज बेचने के लिए मजबूर है।

महंगाई के बारे में इन्होंने कहा था कि प्रधान मंत्री जी अहमदाबाद से दिल्ली पहुंचेंगे और महंगाई जमीन में चली जाएगी, लोगों ने 200 रूपये प्रति किलो की दाल खा ली। मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि भाजपा वालों को 200 रूपये की बिके या 400 रूपये की बिके, इस बात से कुछ फर्क नहीं पड़ता। एक हाथ से देना है, दूसरे हाथ से लेना है, क्योंकि महंगाई यही बढ़ाते हैं, लेकिन जिस आम आदमी ने 200 रूपये की दाल खायी होगी, वह इस सरकार को भरपूर श्राप दे रहा है और देख लीजिएगा। 2019 के बाद इनका नामोनिशान नहीं रहेगा, 2019 तक की गलती जनता ने कर दी है, वरना बीच में ही यह चली जाती।

मैं आपसे सिर्फ इतना चाहता हूं कि बांहें चढ़ाकर, 56 इंच का सीना फुलाकर यह कहा जाता था कि आदरणीय प्रधान मंत्री दिल्ली पहुंच जाएंगे और सीमाओं पर शांति छा जाएगी। ...(**व्यवधान**)... पठानकोट की घटना आपके घर में हुई या मेरे घर में हुई? मैं आपसे सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं कि इनके आने के बाद जो कुछ भी हुआ हो, लेकिन हालात ऐसे हो गए हैं कि हमारी सीमाओं पर आतंकवादी गतिविधियां बढ़ी हैं, सीमाओं पर अतिक्रमण बढ़ा है। मैं इतना कहना चाहता हूं कि सब चीजों के लिए इनको माफ किया जा सकता है, लेकिन जो सदियों पुराना हिन्दुस्तान का ताना बाना था, जो हमारी कौमी-एकता थी, जिसको ये तोड़ रहे हैं, ये देश तोड़ने का काम कर रहे हैं और सच पूछिए, तो देश तोड़ना किसी देशद्रोह से कम नहीं होता है। इसलिए मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि ये जितना पाप करना चाहे, करें, लेकिन इस देश ताना बाना न तोड़ें, यह मेरा इस सरकार से आग्रह है।

---

*Expunged as ordered by the Chair.